अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 30 जून, 2013)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	8	कुल योग
प्राप्तांक									
पूर्णांक	10	10	10	10	20	4	30	6	100
पुनः जाँच									

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) **'करगं ' शब्द का अर्थ है -**

(क) जल **(ख) ओस**

(ग) बर्फ **(घ) ओला** ( )

(b) **उस साधु को पाप-कर्म का बन्ध नहीं होता, जो -**

(क) हिंसा आदि आश्रवों को विरति भाव द्वारा रोकता है

(ख) शब्दादि इन्द्रिय-विषयों में राग नहीं करता।

(ग) जिसकी मानसिक वृत्तियां नियंत्रित हैं।

(घ) उपर्युक्त सभी। ( )

(c) **'बुझावें नहीं ' अर्थ का सूचक प्राकृत शब्द है -**

(क) न पज्जालिज्जा **(ख) न निव्वाविज्जा**

(ग) न घट्टाविज्जा **(घ) न उज्जालिज्जा** ( )

(d) **जीव का सामान्य-विशेषात्मक बोधरूप व्यापार कहलाता है -**

(क) दर्शन **(ख) ज्ञान**

(ग) उपयोग **(घ) अज्ञान** ( )

(e) **नील और कृष्ण लेश्या पाई जाती है -**

(क) पहली दूसरी नारकी में **(ख) तीसरी नारकी में**

(ग) चौथी नारकी में **(घ) पाँचवीं नारकी में** ( )

(f) **नारकी और देवों में नवग्रैवेयक तक उपयोग पाते हैं -**

(क) 09 **(ख) 06**

(ग) 03 **(घ) इनमें से कोई नहीं** ( )

(g) **'सोही उज्जूयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई' यह गाथांश उद्धृत है -**

(क) दशवैकालिक सूत्र से **(ख) उत्तराध्ययन सूत्र से**

(ग) जीवाभिगम सूत्र से **(घ) सूत्रकृतांग सूत्र से** ( )

(h) **'जंसी' शब्द का अर्थ है -**

(क) जहां **(ख) इस**

(ग) उन **(घ) वे** ( )

(i) नागकुमार देवों में सर्वोत्तम है -

(क) स्वयम्भूरमण (ख) इक्षुरसोदक

(ग) धरणेन्द्र (घ) वेणुदेव ( )

(j) मध्यम ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना वाले जीव कुल कितने भव करके मोक्ष में जाता है -

(क) 2-3 (ख) 15

(ग) 5 (घ) 7-8 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1=(10)

(a) चारित्र ज्ञानपूर्वक होने पर ही लाभकारी होता है। ( )

(b) घाती कर्मो के क्षय से आत्मा जिन होकर सम्पूर्ण लोक को जानता है। ( )

(c) स्वेद-पसीने से उत्पन्न होने वाला जीव खटमल नहीं है। ( )

(d) नवग्रैवेयक देवलोक की उत्कृष्ट अवगाहना 3 हाथ की है। ( )

(e) जीव के वर्तमान भव की पर्याय छोड़ने को च्यवन कहते हैं। ( )

(f) वायुकाय में पांच योग पाते हैं। ( )

(g) धर्मक्रिया में थोड़ी सी भी माया करने से पुरुषवेद का बन्ध होता है। ( )

(h) सुमेरू पर्वत 99 हजार योजन समतल पृथ्वी से ऊंचा तथा 1 हजार योजन जमीन के अन्दर नींव रूप है। ( )

(i) क्षत्रियों में दान्तवाक्य चक्रवर्ती अप्रधान हैं। ( )

(j) उत्कृष्ट चारित्राराधना में उत्कृष्ट दर्शनाराधना की नियमा है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) मेरा दूसरा नाम धर्मप्रज्ञप्ति है। .....

(b) मैं थैली से उत्पन्न होता हूँ। .....

(c) मेरे द्वारा पुण्य और पाप का ज्ञान होता है। .....

(d) मेरी जघन्य स्थिति 10 हजार वर्ष है। .....

(e) मेरे कारण ही कर्म आत्मा के चिपकते हैं। .....

(f) मेरी गति 13 दण्डक में है। .....

(g) मैं आत्मोत्थान में बाधक हूँ। .....

(h) मुझे घुन की उपमा दी गई है। .....

(i) मैं आयताकार पर्वतों में श्रेष्ठ हूँ। .....

(j) मैं बाह्य क्रिया का तीन करण तीन योग से पालन करता हूँ। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a)	उद्भिज	-	मुरमुर	.....
(b)	अग्निकाय	-	इलिका	.....
(c)	मरण	-	टिड्डी	.....
(d)	पृथ्वीकाय	-	1 करोड़ पूर्व	.....
(e)	जलचर	-	तिर्यच	.....
(f)	माया	-	विनय	.....
(g)	मान	-	अप्रतिज्ञ	.....
(h)	मुनि	-	पर्वतों में श्रेष्ठ	.....
(i)	सुदर्शन	-	22 हजार वर्ष	.....
(j)	सम्यक्त्व	-	मित्रता	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :- **10x2=(20)**

(a) त्रस जीव के कोई 4 प्रकार लिखिए।

.....

.....

(b) आचारांग सूत्र में धर्म किसे कहा गया है ?

.....

.....

(c) भोजन से सम्बद्ध अयतना के कोई 4 प्रकार लिखिए।

.....

.....

(d) विधिवत् संयम-धर्म का पालन कौन कर सकता है ?

.....

.....

(e) **किन विशेषताओं से युक्त साधक को सुगति सुलभ होती है ? चार विशेषताएँ लिखिए।**

.....

.....

(f) **पर्याप्ति किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(g) **पहली तथा पाँचवी नारकी की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।**

.....

.....

(h) **असन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय में कितने दण्डक से जीव आवें और कितने दण्डक में जावें ?**

.....

.....

(i) **माया-उत्पत्ति के कोई 4 कारण लिखिए।**

.....

.....

(j) **उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार मान-विजय के दो लाभ लिखिए।**

.....

.....

प्र.6 निम्न गाथाओं को पूर्ण करके लिखिए :- 2x2=(4)

(a) **से पन्नया .....**

..... **जुईमं।।**

(b) **दाणाण सेट्ठं .....**

..... **नायपुत्ते।।**

प्र.7 निम्न प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दीजिए :- 10x3=(30)

(a) **जीवादि तत्त्वों के ज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित करने वाली गाथा लिखिए।**

.....

.....

.....

(b) कैसे साधु को सुगति दुर्लभ होती है ?

.....

.....

.....

(c) जया चयई ..... अणगारियं।। गाथा को पूर्ण करते हुए हिन्दी में भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) समुद्घात किसे कहते हैं ?इसके भेदों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(e) नारकी-देवता के चौदह दण्डकों में वेद द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

(f) अवसर्पिणी काल में गर्भज मनुष्यों की अवगाहना लिखिए।

.....

.....

.....

(g) युगलिकों की स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

(h) भगवती सूत्र शतक 1 उद्दे. 3 सूत्र 6 के अनुसार कैसा जीव, जिनेन्द्र भगवंतों की आज्ञा का आराधक होता है ?

.....

.....

.....

(i) आराधना, आराधक और विराधक को समझाइए।

.....

.....

.....

(j) सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय में अवगाहना द्वार को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

प्र.8 निम्न गाथाओं का हिन्दी भावार्थ लिखिए :- **2x3=(6)**

(a) थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु।।

.....

.....

.....

.....

(b) से सव्वदंसी अभिभूय नाणी, णिराम गंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ।।

.....

.....

.....

.....